गुरु तेग बहादुर

-महान शहीद और मुक्तिदायक



गुरविंदर कौर एक बहुत ही मेहनती और समर्पित माँ थी | बचपन से ही वह सिख गुरुओं के विचारों से काफी प्रभावित थी | वह अपने बच्चों को भी गुरुओं के बारे में अवगत कराना चाहती थी |



गुरविंदर गुरु तेग बहादुरजी से अत्याधिक प्रभावित थी और वह चाहती थी की उसके पोता और पोती भी गुरूजी को जाने और उनके मानव जाती के प्रति किये हुए बलिदानो को समझे | गुरविंदर, गुरूजी के निस्वार्थ स्वभाव को भी, अपने बच्चो के सामने उजागर करना चाहती थी |



जीत जब के .जी (किंडरगार्टन) कक्षा में था और उसे गुरु तेग बहादुरजी के बारे में उतना पता नहीं था। वह यह नहीं जनता था की गुरूजी ने मानव जाति के लिए क्या-क्या त्याग किये थे। अब गुरविंदर का यही मूल उद्देश्य था की वह अपने बेटे जीत और बेटी प्रीत के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें और उन्हें सिख धर्म और गुरूजी की दी हुई शिक्षा का पाठ पढ़ाये।

जीत बेटा, क्या तुम जानते हो की गुरु तेग बहादुरजी कौन थे?

जी माँ, मुझे मालूम हैं, मैंने उनके बारे में अपनी कविता की किताब में पढ़ा हैं।

जीत अब सात साल का हो गया था। गुरविंदर अब सोच में पढ़ गयी की जीत अब स्कूल जाने लगा हैं परन्तु क्या वह गुरूजी के बारे में उतना जान पाएगा? पढाई तो ज़रूरी हैं पर उसके साथ-साथ सिख धर्म और गुरूजी के बारे में भी पता रहना आवशयक हैं। क्या इतने घंटे स्कूल में बिताने के बाद, जीत कुछ जान पाएगा की गुरु तेग बहादुरजी कौन थे? इसलिए एक दिन गुरविंदर ने गुरूजी की कहानी सुनाने का निश्चय किया।



गुरु तेग बहादुर जी का जन्म १ अप्रैल सं.१६२१ में, गुरु का महल अमृतसर में हुआ था | वह गुरु हर गोबिंद सिंह जी के सुपुत्र थे | जन्म के बाद उनका नाम त्याग मल रखा गया वह बचपन से ही बड़े शांत और सहनशील बालक थे और तभी से ही वह निस्वार्थ भावना से मानव सेवा के पथ पर अग्रसर थे |



गुरूजी को अपने बड़े भाई के साथ रहना बहुत अच्छा लगता था| वह अपने भाई के साथ बैट बौल खेला करते थे और घुड़सवारी भी किया करते थे|





तेग बहादुरजी सिर्फ छः साल के थे जब उनके पिता, गुरु हरगोबिन्द साहेब, उन्हें अध्यापक भाई बुढ्ढाजी के पास ले गए|भाई गुरदास जी ने भी, नन्हे तेग बहादुर जी को शिक्षा दी|वह दोनों बहुत ही ज्ञानी और निष्ठावान अध्यापक थे|



जब गुरुजी अपने पिता के साथ कीरतपुर की यात्रा करने निकले तो, उस समय के शासक की सेना ने उनके ऊपर हमला कर दिया|उनके बीच एक भयावह युद्ध हुआ जिसे त्याग मल (गुरु तेग बहादुर) वीरता से लड़े|उनके पिता ने जब यह देखा ,तो उन्हें अपने पुत्र पर बहुत गर्व हुआ और उन्होंमे उनका नाम त्याग मल से बदल कर त्याग बहादुर कर दिया|



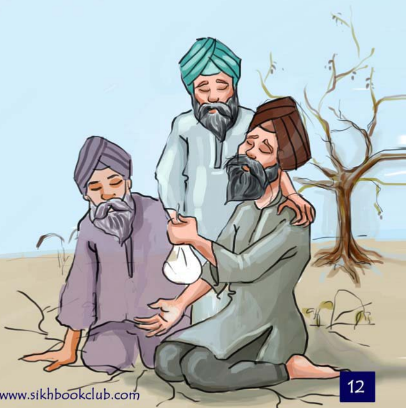
भाई लाल चन्द भी कीरतपुर के निवासी थे और एक बहुत ही समर्पित सिख थे|उनकी एक पुत्री थी जिनका नाम गुजरी था|भाई लाल चन्द अपनी पुत्री के लिए योग्य वर ढूंढ रहे थे तेग बहादुरजी तब २० साल के थे|जब भाई लाल चन्दजी ने गुरूजी को देखा, तो वह गुरूजी के राजकुमार की भांति व्यक्तित्व को देख, अत्यंत प्रभावित हो गए और तुरंत अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रख दिया|



अति शीघ्र ही विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया और विवाह संपन्न हुआ|तेग बहादुर जी के विवाह में गरीबो को भोजन और वस्त्र दान में दिए गए|अप्रैल १६६४ को तेग बहादुरजी को सिख धर्म के नौवे गुरु की उपाधि दी गयी|



इसके बाद गुरूजी को अपना लक्ष्य साफ़ दिखने लगा वह मानव सेवा के पथ पर आगे बढ़ने लगे। वह जगह-जगह जाते और लोगो की सेवा करते सबसे पहले वह आनंदपुर के पास एक गाँव में पहुंचे। वहाँ लोग पानी के बिना तड़प रहे थे और बहुत दुखी थे। किसान भाई भी सब बहुत परेशान थे क्योकि पानी की कमी के कारण उनकी फसल ख़राब हो रही थी। जब गुरूजी ने यह सब देखा तो उन्होंने तुरंत वहाँ एक कुआँ खुदवा दिया। इससे वहाँ के लोगो को अधिक मात्रा में पानी मिलने लगा और उनकी मुश्किलें दूर हो गयीं।



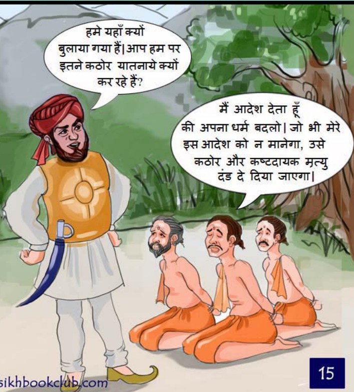
गुरु तेग बहादुर जी ने ही सबसे पहले 'गुरु का लंगर' शुरू किया जहाँ हर जाति, धर्म और समुदाय के लोगो को निःशुल्क भोजन कराया जाने लगा। बिना किसी भी भेद भाव के, लंगर का आयोजन किया गया।



गुरूजी ने दिल्ली और उसके बाहर, कई जगहों पर रुक के लोगो की हर तरह से सेवा की और उन्हें अपने धार्मिक और आध्यात्मिक विचारो के ज्ञान का गौरव प्रदान किया। जब गुरूजी दिल्ली पहुंचे, तो कई सिख भाइयों ने उनका बड़े प्रेम, श्रद्धा और उत्साह के साथ स्वागत किया।



गुरू तेग बहादुर जी अब जगह-जगह जाने लगे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग उनका ज्ञान प्राप्त कर सके | वह लोगो को ज्ञान, पीड़ित को उपचार और आशाहीन को आशा की किरण देने में सफल रह | फिर एक अत्यंत दुखद घटना घटि- औरंगज़ेब उस समय के मुग़ल शासक थे | वह बहुत ही निर्दयी और कठोर मुग़ल सम्राट थे | औरंगज़ेब ने हिन्दू पंडितो और ब्राह्मणो को अपना धर्म बदलने का आदेश दिया | उसने यह घोषणा करवाइ, की जो कोई भी जो उसके इस आदेश को नहीं मानेगा, तो उसे बंदी बना के मृत्य दंड दे दिया जाएगा |



पंडित किरपा राम तुरंत ब्राह्मण जाति के अध्यक्ष के साथ गुरूजी के पास पहुंचे। वह गुरूजी से मिलने कि प्रतीक्षा करने लगे।



पंडित किरपा राम ने, गुरूजी के समक्ष, घटना का पूरा विवरण दिया|



गुरूजी,
हम सब पंडित और ब्राहमण, अतयंत
दुखी हो गए हैं|हम सब तरह से हार चुके हैं
औरंगज़ेब हम पर ज़ोर दाल रहा हैं की हम
अपना धर्म बदल दे, जो की हम कतः नहीं
चाहते| कृपया हमें मार्ग दर्शन
दे दिजीये|

गुरु तेग बाहदुर जी ने सब हाल सुना और कहा की इस राज्य के राज्यपाल और शासक को यह सुचना भिजवा दी जाये की पंडितो और बहर्मणो पर हो रहे अत्याचारों को तुरंत समाप्त करे मुग़ल शासक, औरंगज़ेब को बता दिया जाये की अगर वह गुरु तेग बहादुर का धर्म परिवर्तित कर सके, तो ही बाकी सब हिन्दू और ब्राह्मण भी अपना धर्म बदल सकते हैं |



सभी पंडित औरंगज़ेब के पास गए और उनसे गुरूजी की कही हुई बात बोली। वह बोले-



औरंगज़ेब के शैतानी दिमाग ने सोचा की अगर गुरु ने अपना धर्म बदल लिया तो बाकि सब को भी अपना धर्म बदलना होगा और मुझे ज़्यादा कुछ करना भी नहीं पड़ेगा । औरंगज़ेब के सैनिको ने जब गुरुजी को धर्म बदलने को कहा तो वह नहीं माने और अपने निर्णय पर अडिग रहे । गुरूजी और उनके कुछ अनुयायियों को दिल्ली ले जाया गया जहाँ उनसे एक बार फिर यह पुछा गया की क्या वह अपना धर्म बदलने को तैयार हैं की नहीं और अगर नहीं तो भयानक और कष्दायक मृत्यु दंड को स्वीकार करें। गुरूजी और उनके शिष्यों ने मृयु दंड स्वीकार कर, अपने प्राणो का बलिदान देना उचित समझा। इस निर्णय को सुन के औरंगज़ेब का क्रोध चरम सीमा पर पहुंच गया। उसने तुरंत अपने सेवक लालालुद्दीन को गुरूजी का सर, धड़ से अलग करने का आदेश दिया। गुरूजी ने खुशी-खुशी इस आदेश को मान लिया. उनके साथ, उनके अनुयायी गुरु मती दास। भाई दयाला और भाई सति दास को भी कठोर मृत्यु दंड दे दिया गया।

गुरु और उसके शिष्यों को
मृत्यु दंड दिया जाता हैं।

गुरु तेग बहादुर जी को ११ नवम्बर १६७५ की दोपहर, दिल्ली में स्थित, चाँदनी चौक में मृत्यु दंड दे दिया गया | उसी स्थान पर आज गुरजी को श्र्रदांजली देता हूआ, सीस गंज गुरुदवारा स्थित हैं |



तो बच्चों,
यह थी महान बलिदानी और
हमारे मुक्ति दायक, श्री गुरु तेग
बहादुरजी की कहानी, जिन्होंने
मानव सेवा के पथ पर चलते हुए
अपने प्राण तक त्याग दियें|

माँ, आपका
धन्यवाद ! गुरू तेग बहादुर
जी की कहानी बहुत प्रेरणा
दायक थी|

जी माँ,
आज हम गुरूजी को सही
से जान पाएं हैं| आपका
बहुत-बहुत धन्यवाद|